ISSN No. 2394-9996

हिंदी यात्रा साहित्य की प्रमुख स्त्री : यात्रा साहित्यकार

श्रीमती प्रा. विद्या खाडे
कला महाविद्यालय नांदूरघाट
ता.जि. बीड.

यात्रा और मनुष्य जाति का गहरा संबंध है। मस्तिष्क विकास से पूर्व भी मनुष्य के पुर्वज यात्री थे। यात्रा मनुष्य की मूलभुत क्रियाओं में से एक है। अतः आरंभिक काल में भी मनुष्य की यात्रा के दृष्टांत मिलते है। मानव की विभिन्न संस्कृतियों के उत्थान और पतन का मूल यात्रा है। मनुष्य को यात्रा के संदर्भ में `सांस्कृतिक दूत` कहा गया है।

मानव का विकास भी यात्रा से संबंध रखता है। यात्रा मनुष्य की प्रगति का सोपान है। यात्रा के कारण मनुष्य को बहुआयामी व्यक्तित्व तथा अनेक अनुभूतियों का गंभीर ज्ञान होता है। अपने जीवन की आवश्यकताओं के लिए तथा व्यापार वाणिज्य के निमित्त मनुष्य ने यात्रा की है। ``भ्रमण के द्वारा ही मनुष्य के बौद्धिक विकास में तेजी आई। नमुष्य का पुरा इतिहास उसकी घुमक्कडी प्रवृत्ति से संबंधीत है। मनुष्य के मन में सौंदर्य का बोध तो था ही, प्रकृति के परिवर्तित रूपों ने भी उसे प्रभावित किया। मनुष्य की आनंद और उल्लास की भावना पुष्ट हुई। मनुष्य ने इसी यायावरी वृत्ति को साहित्यिक रुप प्रदान किया।``[1]

यात्रा से प्राप्त अनुभवों का कथन करने की प्रवृत्ति यात्रा की ही तरह सहज है। मनुष्य निरंतर अपनी अनुभुति का प्रकटीकरण चाहता है। `यात्रा वर्णन` इसी प्रकटीकरण की तीव्र इच्छा का ही लिपिबद्ध रुप है। पुराने जमाने में देशाटन की जिज्ञासा निर्माण करने का महत्वपुर्ण कार्य इन्ही यात्रा वर्णनों ने निभाया है जिसके जरिए आज हम `जय जगत` के स्थान के आकांक्षी बने है। आधुनिक हिंदी साहित्य में अनेक घुमक्कडों ने साहित्य के इस क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। यात्रा महत्ता प्रतिपादित करनेवालों में हिंदी के प्रसिद्ध घुमक्कड राहुल सांस्कृत्यायन का नाम महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस संबंध में काफी लिखा है उनके `यथातों घुमक्कड जिज्ञासा` नामक निबंध मे उदधृत शेर तो काफी प्रसिद्ध है-

``सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ?
जिंदगानी गर कुछ रही, तो नौजवानी फिर कहाँ?``

यात्रा मनुष्य की अपरिहार्य आवश्यकता है, उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। यात्रा के दौरान व्यक्ति स्व-पर, देश-काल, जाती - धर्म आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर ह्रदय और उदार दृष्टिकोण से जीवन जगत का साक्षात्कार करता है। एक ओर यात्रा बाह्य जगत के सत्यों से उसका परिचय कराती है, तो दूसरी और स्वयं को भी जानने समझने का अवसर प्रदान करती है। उसकी भावनाओं, विचारों, कल्पनाओ को जागृत करती है। इसी संदर्भ में **महादेवी वर्मा** का कथन महत्वपूर्ण है- ``हमारी संस्कृति में यात्राओं का विशेष महत्व है क्योंकि इस विचित्रता भरी धरती मे एक संस्कृति का प्रश्न यायावरी के साथ जुडा है।``[3]

हिंदी यात्रा साहित्य का विकासात्मक अध्ययन करते हुए हमने देखा कि स्त्री, यात्रा साहित्यकार भी हो सकती है इस पर बहुतेरे ने आश्चर्य व्यक्त किया। हिंदी की पहली स्त्री यात्रा साहित्यकारों की समीक्षा करनेवाली एकमात्र लेखिका **डॉ. सुमन राजे** का मंतव्य ही इस बारे में काफी कुछ उजागर करता है। ``विषय नि:संदेह बहुत अच्छा है, परंतु उसमें गुंजाइश बहुत काम है। मुझे लगता है, अब वह यात्रा साहित्य दुर्लभ है, जिसे राहुल सांकृत्यायन और अज्ञेय जैसे यायावरों ने लिखा। उस तरह की यात्राएँ स्त्री के लिए तब भी सुलभ नही थी, आज भी सहज नही है।``[4]

इन सभी कठिनाईयों के बावजूद हिंदी में यात्रा साहित्य लिखनेवाली जो स्त्री साहित्यकार है, उनको प्रस्तुत किया जाता है।

1) श्रीमती हरदेवी :- अब तक अनुसंधान के प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रीमती हरदेवी हिंदी की पहली यात्रा साहित्यकार है। जैसा कि डॉ. सुरेंद्र माथुर लिखते है- ``मुद्रित रूप में यात्रा साहित्य का सर्वप्रथम ग्रंथ जो हमे देखने को मिल सहा है वह लंदन यात्रा नाम से है।``[4] इसकी लेखिका हरदेवीजी है। इनकी यह पुस्तक ओरिएंटल प्रेस, लाहौर से सन 1883 ई.मे प्रकाशित हुई थी।

2) राधा कृष्णमूर्ति :- डॉ.श्रीमती राधा कृष्णमूर्ति `कर्नाटक के मंदिर` शीर्षक लेख माला को हर मास `हिंदी प्रचारवाणी` मे लिखा करती थी। उसी लेखो का संकलन `कर्नाटक के मंदिर` पुस्तक रुप में सन 1999 में प्रकाशीत हुआ। राधा कृष्णमुर्ति ने इस लेखकमाला को तैयार करते समय कई मंदिरों मे खुद अनुभव कर अत्यंत परिश्रम के साथ लेखन का कार्य किया है। कर्नाटकी सांस्कृतिक महता को हिंदी जगत् के सामने लाने की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। इनकी पूरी पुस्तक मे हम्पी, उडूपी, कोल्लेरू, मुक्काम्बिका, श्रीरंगपट्टणम, मेलुकोटे, तोण्डनूर, मैसूर, नंजनगुडु, श्रृगेरि क्षेत्र, कुल्के क्षेत्र, सोमनाथपुर, तलकाडू, श्रीक्षेत्र गोकर्ण, इडगुंजी और यात्रा क्षेत्र धर्मराज स्वामी एहोके के देवालय, बादामी और पटदरकल्लु आदि स्थानों के देवालयों के संदर्भ में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते है।

3) निर्मला अग्रवाल :- `महंगी रोटी सस्ते लोग` इनकी अगस्त 2000 मे प्रकाशित कृति है। जैसे कि शीर्षक से ही पता चलता है, इसमें पर्यटन नहीं सामाजिकता का प्रश्न है। लेखिका ने पुणे शहर के निचले तबके, फुटपाथ पर रहने वाले लोगों के जिजीविषा को इसमें अभिव्यक्त किया है। पुणे जैसे उन्नत महानगर में घुमने के बाद लेखिका ने जो अनुभव किया वह उनके शब्दों मे इस यात्रा का सबसे बड़ा सबक जो मुझे मिला, वह यह कि बेहद नाजूक और त्रस्त हलातों में भी ये हिम्मत और हौसले का दामन नहीं छोड़ता जटिल परिस्थितियों में, घुट-घुट कर जीते हुए भी इनमें बेहतर जिन्दगी जीने और उसके लिए कड़ी मेहनत करने की ललक है। तीन महिने रोजाना घँटो इनके बीच घुमने के बाद मैने पाया कि जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी ये लोग दो वक्त की रोटीं नही जुटा पाते। अँधेरी बदबूदार झोपड़ी मे रहना जैसे इनकी नियति है।`[8]

4) मलिका बिरदी :- लेखिका ने यह यात्रा अभियान बचेंन्द्री पाल के नेतृत्व में भरतीय महिलाओं की प्रथम हिमालय आर पार यात्रा 97 बॅनरतले की थी। अन्य महिला यात्री थी - चौला जागीरदार, कोकिला, सुधा, नंदा पटेल, सुमीता राय, विनीता मुनि और अनिता सरकार। यह यात्रा कराकोरम दर्रे से, सियाचीन के ग्लेशियर के इंदिया कौल तक की है। पूरी यात्रा डायरी शैली में लिखी गई है। इसमें भूतान की पहाड़ी यात्रा के अनुभव भी है। हमे खडी चढ़ाई पार करनी पडी। नदी के किनारे का रास्ता बंद था, कलउंगूर छू से साथ चीड़ के जंगलो की गर्म चढ़ाई से मेरा मनोबल कमजोर हो चुका था। एक के बाद दूसरी पहाड़ीयों छोटी, छोटी घाटियों, झरनों व नालों को पार कर घंटो तक लगातार चलते रहेने के बाद अंत: चोंका ला पर शाम 7 बजे सेंगोर जिले में प्रविष्ट हुये।`[8] एक जॉबाज गिर्यारोहक की तरह मलिका विरदी ने ये पहाड़ के आर-पार की यात्रा की है, जो काफी रोमांचक है।

5) नासिरा शर्मा :- हिंदी के यात्रा साहित्य मे महिला द्वारा लिखित यात्रा साहित्य की सबसे बड़ी कृति इन्ही के नाम है। हिंदी, उर्दू, फारसी, पश्तो, अंग्रेजी आदि कई भाषाओं की जानकारी प्रसिद्ध कथा लेखिका नासिरा शर्मा ईरानी साहित्य, कला, संस्कृति एवं राजनीति की भी विषेषज्ञ है। उनका 435 पृष्ठों का बृहत यात्रा वृत्त `जहाँ फव्वारे लहू रोते है।` सन 2003 प्रकाशित हुआ है। इसमें उनके 17 यात्रावृत्त संग्रहीत है। `अठराहवी यात्रा` शीर्षक से उनके पाँच साक्षात्कार भी इस पुस्तक मे दिए गए है। ईरान के अतिरिक्त आपने पेरिस, लंदन, जपान, नेपाल, अफगानिस्तार, पाकिस्तान, ईराक, फिलीस्तीन, कुर्दिस्तान आदि की यात्राएँ भी की है और इन देशों के हालात का वर्णन भी अपने यात्रावृत्तों में किया है। लेखिका के ये सारे यात्रा वृत्त सन 1976-2003 के बीच के है। अपनी प्रारंभिक यात्राओं के

संदर्भ मे वे लिखती है, पहली यात्रा में जिस ईरान ने मुझे अपना मेहमान बनाकर बुलाया था, उसकी अध्यात्मिक एवं सुफियाना साहित्यिक ऊर्जा को मैंने गहराई से महसूस किया था। यह अहसास जागा था जैसे अपने देश का दरवाजा खोलकर मैंने, अपने घर के दूसरे आंगन मे कदम रखा हो। दूसरी यात्रा वर्ष भर बाद मैने अपने खर्चपर की जिसका उद्देश ईरान की महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों एवं हिंदी व ईरान साझी सभ्यता पर काम करना था।"[9]

6) हेमा उनियाल :- उत्तरांचल के धर्म संस्कृति एवं वास्तुशिल्प को लेकर उनियाल ने `कुमाऊँ के प्रसिद्ध मंदिर` नामक कृति की रचना की है जो सन 2005 मे दिल्ली प्रकाशित है। लेखिका द्वारा मुझे लिखे पत्र से ज्ञात होता है कि इस कृति की रचना के लिए लेखिका को कुर्मांचल की भूमि को नजदिक से जानने के लिए काफी यात्राएँ करनी पडी है और वह भी पहाड़ी।"[10] एक प्रकार से यह अनुसंधात्मक कार्य है, कुमाउँ : संक्षिप्त परिचय, कुमाऊँ : संक्षिप्त परिचय, कुमाऊँ के प्रसिद्ध मंदिर, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से कुमाऊँ के प्रसिद्ध लोक देवता एवं उनकी लोक गाथाएँ कुमाऊँ के प्रसिद्ध मंदिरों की वास्तुकला, कुमाऊँ का धार्मिक इतिहास आदि शीर्षकों मे कृति विभाजित है। कृति मे कृष्णधवल एवं रंगीन चित्रों की भरमार है। कुमाऊँ के संबंध मे भौगोलिक तथ्यात्मक जानकारी भी है। लेखिका गढ़वाल के प्रसिद्ध मंदिर, मंदिर नामक कृतिपर भी कार्य कर रही है।

7) मृदुला गर्ग :- सन 2006 मे प्रकाशित `कुछ अटके, कुछ भटके` नामक यात्रा वर्णन में लेखिका मृदुला गर्ग ने मालदीव, सूरीनाम, जापान, सिक्किम, केरल, आसाम, तामिलनाडू एवं राजस्थान यात्रा की अभिव्यक्ति की है।"[11] लेखिका हिंदी की प्रतिष्ठित साहित्यकार है। वह साहित्यिकता इनके यात्रा वर्णन मे भी दिखाई देती है। इसमें ग्यारह यात्रा लेख है। प्रारंभ मे भटकते गुजरे जमाना नामक लेख में यात्रा के संबंध मे चित्रन किया गया है।

8) शिवानी :- कहानीकार और, उपन्यासकार से रूप में शिवानी ने काफि ख्याति अर्जित की, साथ ही साथ संस्मरण और रेखाचित्र भी लिखे, उसी क्रम मे यात्रागत संस्मरण के रूप में `यात्रिक` उनकी प्रसिद्ध रचना है। जो सन 2007 मे प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में चैखेति और यात्रिक शीर्षक रचनाएँ सम्मिलित है। चैखेति मे मार्क्सवादी रुस तो यात्रिक मे पश्चिमी विचारधारा का केंद्र इंग्लैड को पार्श्वभूमि मे रखा गया है।

निष्कर्ष :- सार रूप मे यह कहा जा सकता है कि जिन स्त्री यात्रा साहित्य में जिन भागों प्रदेशा की चर्चा हुई है उनमें काफी विस्तार एवं विविधता है। भाषाभाषी की दृष्टि से स्त्री यात्रा साहित्यकारों का उल्लेख किया जाए तो जिनकी मातृभाषा हिंदी है उनकी कृतियों के बाद बहुतायत में बांग्ला भाषाभाषी स्त्रियों की कृतिया अधिक

है, उसके बाद मराठी और गुजराती की। हिंदी के यात्रा साहित्य मे स्त्री यात्रा साहित्यकारों की संख्या सन 1990 के बाद तेजी से बढ़ी है। वैश्वीकरण, मध्यवर्ग का तेजी से विकसित होना, स्त्रियों के शिक्षा एवं नौकरीयों के क्षेत्र में बड़ी संख्या मे आना, कुल मिलाकर हर भारतीय की आर्थिक स्थिती मे सुधार होना, स्त्री विमर्श के चलते स्त्रियों की सामाजिक स्थिति मे सुधार होना आदि ऐसी बाते है जो सन 1990 के बाद ही सुलभ हुई।

संदर्भ सूची :-

1) सं. ठकार निशिकांत, हिंदी कथेत्तर साहित्य HIN 213 च.मु. वि.
2) डॉ. उप्रेती रेखा, हिंदी का यात्रा साहित्य पृष्ठ क्र. 2
3) सं. अज्ञेय, जन जनक जानकी, पारोवाक् से उदत
4) डॉ. राजे सुमन
5) डॉ. शर्मा प्रताप पाल, हिंदी का आधुनिक यात्रा साहित्य पृष्ठ क्र. 11
6) देवबाला शांति, सुवर्णभूमिक की ओर, आमुख्य से
7) अग्रवाल निर्मला महंगी रोटी सस्ते लोग पृष्ठ क्र. 45.
8) यात्राओं पर केंद्रीत सहस्त्राब्दि अंक - 1 पहाड पृष्ठ क्र. 265-66.
9) तिवारी रामचंद्र हिंदी का गद्य साहित्य पृष्ठ क्र. 10.
10) हेमा उनियाल या यात्रा लेख पृष्ठ क्र. 07.
11) गर्ग मृदुला कुछ अटके कुछ भटके पृष्ट क्र. 10.

☆ ☆ ☆